लोक जीवन की शिक्षा लोक साहित्य

– रेखा विद्यार्थी

आज विद्यालयी शिक्षा में लोक साहित्य को जोड़ना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के पाठयक्रम में इस तरह के प्रयास दिखते हैं। लेकिन इसमें अभी बहुत कुछ जोड़ने की जरूरत है।

किसी भी समाज, संस्कृति में खान–पान, वेश–भूषा, भाषा–बोली, आदि सब लोक साहित्य में व्यक्त होता है। लोक साहित्य अपने आप में कई चीजों को समेटे हुए रहता है। झरनों का बहना, नदियों का शोर, बारिश की रिमझिम, पक्षियों की चहचहाट, तीज–त्योहार, मेले, लहलहाती खेती, फूलों का खिलना व महकना, भंवरों का गूंजन, खास मौंको पर खास पहनावा, खान–पान, मान्यताएं, और वहां की खास परम्पराओं का द्योतक है लोक साहित्य। कह सकते हैं कि लोक साहित्य लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। यदि लोक संस्कृति एक विशाल वृक्ष है तो लोक साहित्य उसकी एक शाखा है। लोक साहित्य का लिखित रूप बहुत सीमित है, यह श्रुति ज्ञान परम्परा के कारण अधिक गतिमान रहा। यह कब से है, प्रश्न का सीधा उत्तर है जब से मानव का अस्तित्व है। परम्परागत लोक साहित्य किसी एक व्यक्ति ने लिखा हो ऐसा नहीं है। ऐसा बहुधा देखने को मिलता है कि एक गीत जिस क्षेत्र में जिस तरीके से गाया जाता है उसे दूसरे क्षेत्र में भिन्न तरीके से गाया जा सकता है। इसी कारण लोक साहित्य की कई विधाएं एकरूपीय होने से बची रही हैं। इस कार्य में लोक किसी प्रतिबंध से परे भी है।

लोक साहित्य को निम्नवत भागों में विभाजित किया जा सकता है –प्राकृतिक सफलताओं पर आधारित साहित्य, लोक जीवन के लिए लिखा गया साहित्य, जातीय लोक साहित्य परन्तु विधाओं के रूप में लोक साहित्य चार भागों में विभाजित है। लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य। अतः किसी भी समाज के जन–जीवन में उसकी संस्कृति एवं साहित्य की स्पष्ट झलक मिलती है। समाज का रहन–सहन, जीवन जीने का ढंग, भाषा–भाव,

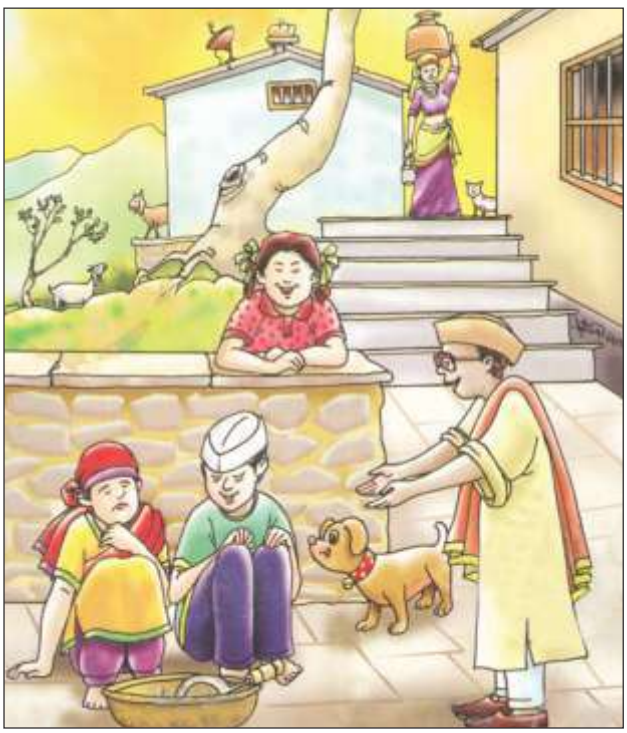

क्रिया व्यवहार, आदि लोक साहित्य में अभिव्यक्त होता है। यदि हमें किसी समाज के बारे में जानना हो तो वहां के लोक साहित्य को समझना होगा। किसी समाज की संस्कृति और सामाजिक परिदृश्य की जानकारी भी उस समाज के लोक साहित्य से मिलती है। सामाजिक सरोकारों की जानकारी कथा कहानियों से पता चलती है। क्योंकि कई घटनाएं मान्यताओं तथा रीति रिवाजों से भी जुड़ी रहती हैं। जो उस समाज के लोगों के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। देश में मौजूद विविधता के साथ समुदायों की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। इस

पहचान में सामाजिक मूल्य, धारणाएं, समाहित हैं। लोक साहित्य में भी विविधता मौजूद है। लोक जीवन के उतार–चढ़ाव, सुख दुख, संघर्ष, उत्साह, जीत–हार आदि ने लोक विधाओं का स्वरूप तय किया होगा। समाज की जमीनी जानकारी हमें उस समाज के लोक साहित्य से पता चल सकती हैं। ऐतिहासिक तथ्यों का पता भी लोक साहित्य देता है। स्थानीय संस्कृति में गीत मुहावरे, लोक गाथा आदि में उस समुदाय के त्योहार, मेले आदि की कहानी भी होती है। किसी भी समुदाय को अपनी भूमि से अपने संसाधनों से लगाव इसी आधार पर होता है। कह सकते हैं कि लोक जीवन की तस्वीर को बयां करने में लोक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए समाज को यह प्रिय होता है, अपनी जमीन और समाज से जुदा होने के दर्द पर भी कई तरह के गीत विभिन्न समुदायों में इसीलिए प्रचलित हैं।

आज विद्यालयी शिक्षा में लोक साहित्य को जोड़ना आवश्यक है। बड़ी विडम्बना है कि बच्चे दूर की जानकारियों से वाकिफ होते हैं लेकिन अपने आस–पास की जानकारियों से उन्हें हम कम ही परिचित कराते हैं जिनके कारण अपने परिवेश के प्रति अनभिज्ञता का भाव उनमें गहराता जाता है, जो चिन्ताजनक भी है। प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन के पाठयक्रम में इस तरह के प्रयास दिखते हैं। लेकिन इसमें अभी बहुत कुछ जोड़ने की जरूरत है। अपने परिवेश को समझने की ललक बच्चों में कैसे जगे इस बात के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत है। बच्चे अपनी जमीनी चीजों से जुड़े रहेंगे साथ ही वह पर्यावरण के लिए संवेदनशील भी रहेंगे। जल, जंगल, जमीन और अपनी सामाजिकता तथा सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति जागरूक भी रहेंगे। बच्चे लोक साहित्य का अध्ययन करेंगे तो उनको प्रकृति और मानव के बीच स्थापित परस्परता का भान भी होगा।

विद्यालयी शिक्षा को समझते हुए शिक्षार्थी यह भी समझेंगे कि जिस तरह उनका सामाजिक ताना–बाना है, उसी प्रकार हर अन्य समुदाय की अपनी सामाजिकता होती है। इस तरह बच्चे सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता के मूल्य को समझ पाते हैं और दूसरों के प्रति सम्मान का भाव जगता है। हमें एक बात आम तौर पर देखने को मिल जाती है कि समाज में पलायन की दर बढ़ रही है। अपनी संस्कृति और जमीन से लोगों का मोह भंग हो रहा है। वह रोजी–रोटी की जुगत में शहरों की ओर रुख कर रहे हैं। इस फेर में उनसे लोक साहित्य, संस्कृति सब छूटती जा रही है। फिर जहां बस गए वहीं एक मिक्स कल्चर बनने लगता है। जीवन के संघर्ष में लोक साहित्य की कथाओं और गाथाओं को सुनने, गुनगुनाने का समय और अवसर छूट जाता है। यहीं कारण है कि लोक साहित्य के प्रति एक तरह की विमुखता भी दिख रही है। विकास की होड़ उन्हें अपने स्थानीय लोक साहित्य और लोक विधाओं से दूर ले जा रही है। लोक साहित्य का प्रचार–प्रसार भी कम हो चला है। क्षेत्रीय स्तर पर स्तरीय पुस्तकालय हों, स्कूलों में पढ़ने की संस्कृति विकसित हो, बच्चे और शिक्षक साथ में कहानियां, कविताएं पढ़ें आपस में साझा करें, लोक साहित्य की चुनिंदा पुस्तकें पढ़े। इस तरह से लोक साहित्य को समझने का मौका भी होगा। ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक भी उस स्थान विशेष की संस्कृति और सामाजिकता और लोक साहित्य से परिचित होंगे तो वह उस ज्ञान को स्कूली पाठयक्रम से जोड़कर शिक्षण कार्य कर पाएंगे। अक्सर देखा जाता है कि स्कूलों में लोक संस्कृति को स्थानीय भाषिक गीतों और कुछ नृत्यों तक सीमित कर दिया जाता है। जबकि संस्कृति का क्षेत्र इतना संकुचित नहीं है। अब सवाल यह बनता है कि लोक साहित्य के उपयोग से कक्षा–कक्ष में सीखना कैसे उपयोगी हो सकता है? लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं का सीखने में उपयोग कर पढ़ने, समझने और अभिव्यक्त करने की मौलिकता को बचाया जा सकता है।

(लेखिका ब्लॉक हवलबाग, रा.प्रा.वि. सिद्धपुर, अल्मोड़ा में शिक्षिका हैं।)